

आवर्तार्थ स्तवनावली ।



न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दमूर्ति

श्री आत्मागमनी माहाराज ।

संग्रहकर्ता

बी. पी. सिन्धि ।

प्रकाशक—

हिन्दीसाहित्य कार्यालय, आबूरोड.

विक्र. सं. १०.७६.

बीर सं. २४४९.

मूल्य ०-२-०.

सद्गत प्रातःस्मर्णिय न्यायांमोनिधि

जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरि-

श्वरजी श्री आत्मारामजी माहा-

राजकी सेवामें समर्पण

आपका चरणोपासक



बी० पी० सिंघी.

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કૉપીરાશિદ વિભાગ]

અનુક્રમાંક . ૮૨૫૯ વાર્ષિક

પુસ્તકનું નામ રા. ૫૨ નાથ રા. ૫૫ નાથ

વિષય ૫૨૩:૪૪૭

आवू तीर्थराज स्तवन संग्रह ।

१

चालो चालोने राज, गिरिधर रमवा जइए-ए देशी
आवो आवोने राज,

श्री अर्बुदगिरि जइए ।

श्री जिनवरनी भक्ति करिने,

आतम निर्मल थइए ॥ आ० ॥

विमल वमइना प्रथम जिनेश्वर,

मुख निरखे सुख पइए ।

चंपक केतकी प्रमुख कुसुमवर,

कंठे टोडर ठवीए ॥ आ० १ ॥

जमणे पासे लूणवसइ,

श्रीनेमिसर नमीए ।

* राजिमति वर नयगे निरखी,

दुःख दोहग सति गमिए ॥ आ० २ ॥

सिद्धाचल श्री ऋषभ जिनेश्वर,

रैवत नैम समारिए ।

अर्बुदगिरिनी यात्रा करतां,

चिहुं तीर्थ चित्त घरीए ॥ आ० ३ ॥

* राजिमतिक्रा पूरा जीवन चारित्र राजिमति नामक पुस्तक

मंगाकर देखे ।

मंडप मंडप विविध कोरणी,
 निरखी ह्यडे ठरीए ।
 श्रीजिनवरना धिब निहाली,
 नरभव सफलो करीए ॥ आ० ४ ॥
 अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी,
 अशुभकर्म सवि हरिये ।
 पास शांति निरखी जब नयणे,
 मन मोह्यु हुंगरिये ॥ आ० ५ ॥
 पाजे चढतां उजम वाधे,
 जेम घोडे पाखरीए ।
 सकल जिनेश्वर पूजीकेशर,
 पाप पडल सविहरिये ॥ आ० ६ ॥
 एक ध्यान प्रभुने ध्याता,
 मन मांहि नवि डरीए ॥
 ज्ञान विमल कहे प्रभुसुपसाय,
 सकल संघ सुख करीए ॥ आ० ७ ॥
 ॥ इति ॥

२

चित्त चेतोरे-ए देशी

आदि जिनेश्वर पूजतां, दुःख भेटोरे ॥
 आबुगढ द्रढचित्त, भविजई भेटोरे ॥
 देलवाडे देहरां नमी ॥ दुःख भेटोरे ॥
 चार परिमित नित्य, भविजई भेटोरे ॥१॥

बीस गज बल पद्मावती ॥ दु० ॥
 चक्रेश्वरी द्रव्य आण ॥ भ० ॥
 शंख दिए अंबासुरी ॥ दु० ॥
 पंश केश बहे बाणा ॥ भ० ॥ २ ॥
 बार पादशाह जीतीने ॥ दु० ॥
 विमल मंत्री आल्हाद ॥ भ० ॥
 द्रव्यभरी धरती कीयो ॥ दु० ॥
 रीषवदेव प्रासाद ॥ भ० ॥ ३ ॥
 बिहुतर अधिका आटशे ॥ दु० ॥
 बिंय प्रमाण कहाय ॥ भ० ॥
 पन्नरशे कारिगरे ॥ दु० ॥
 वर्ष त्रीके ते थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥
 द्रव्य अनोपम खरचियो ॥ दु० ॥
 लाख त्रेपन बार कोडी ॥ भ० ॥
 संवत दश अठयाशीए ॥ दु० ॥
 प्रतिष्ठा करी मन होडी ॥ भ० ॥ ५ ॥
 * देराणी जेठाणीना गोखला ॥ दु० ॥

* देराणी जेठाणीका गोखला जो उसमें लिखा है वह गलत है क्योंकि दर असल वे देराणी जेठाणीके गोखले नहीं परन्तु दोनों स्रोतके नामसे बने हैं यह उन गोखलों पर लिखे हुए लेखसे साफ मालूम होता है। इसका पूरा वर्णन आबुतीर्थ गाइडमें देखे।

इन गोखलेकी भति उत्तम लारीगरीकी फोटू जिनको देखना हो मंगवि किमत रु. १-०-० है जो हिन्दी साहित्य कार्यालय आबुतीर्थ से प्राप्त होती है।

लाख अढार प्रमाण ॥ भ० ॥
 वस्तुपाल तेजपालनी ॥ दु० ॥
 ए होइ एकांता जाण ॥ भ० ॥ ६ ॥
 मूलनायक नेमीसुर ॥ दु० ॥
 चारशे अडशट बिंब ॥ भ० ॥
 ऋषभ धातुमयी देहरे ॥ दु० ॥
 एकसो पिस्तालीश बिंब ॥ भ० ॥ ७ ॥
 चौमुख चैत्य जुहारिये ॥ दु० ॥
 काउसगीया गुणवंत ॥ भ० ॥
 बाणुभित तेहमां कह्युं ॥ दु० ॥
 अग न्यासी अरिहंत ॥ भ० ॥ ८ ॥
 अचलगढे प्रभुजी घणा ॥ दु० ॥
 जात्रा करो होशियार ॥ भ० ॥
 कोटि तपे फल जे लहे ॥ दु० ॥
 ते प्रभु भक्ति विचार ॥ भ० ॥ ९ ॥
 सालंबन निरालंबने ॥ दु० ॥
 प्रभु ध्याने भवपार ॥ भ० ॥
 मंगल लीला पामीए ॥ दु० ॥
 धीर विजय जयकार ॥ भ० ॥ १० ॥

 ३

आबुगिरि राजनां देवल वखणाय छे,
 मने देखी लवु देखी लवु थायछे ॥आबु॥

संसारी उपाधि मने गमती रे नथी ।
 देवल मां दिल तणायछे ॥ आबू० ॥१॥
 देराणी जेठाणीना गोखला दिकनी ।
 कोरणी अजब गणायछे ॥ आबू० ॥२॥
 आदिनाथ नेमिनाथ तणाबे ।
 दुनियांमां दहेरा पंकायछे ॥ आबू० ॥३॥
 ऐहवा मिंदरना दर्शन करतां ।
 पाप पाताले जायछे ॥ आबू० ॥४॥
 त्रिजीरे वार इहां जात्रा करीने ।
 हंस आनन्द अति पायछे ॥ आबू० ॥

४

(कोईलोपर्वत धुंधलोरे लो)

आबु अचल रळीयामणो रे लो,
 दिलवाडे मनोहर; सुखकारीरे
 वादलीएजे स्वर्ग शुरेलो,
 देवल दीपे चार बलिहारीरे, भाव धरीने
 भेटीएरे लो ॥ १ ॥

बार पादशाह वश कीयारे लो,
 विमल मंत्रीसर सार; सु०
 तेणे प्रासाद निपाइओरे लो,
 रिखभजी जगदाधार ॥ ब० भा० ॥ २ ॥

तेह चेत्यमां जिनवरुं लो,
 आठसेने बोतेर, सु०
 जे दीठे प्रभु सांभरे लो,
 मोह कयौं जेणे जेर ॥ ब० । भा० ॥ ३ ॥
 द्रव्य भावथी तिम वळीरे लो,
 दिधी दडल काज; सु०
 चेत्य तीहां मंडावीयुरे लो,
 लेया शिवपुर राज ॥ ब० । भा० ॥ ४ ॥
 पंदरसे कारीगरोरे लो,
 दीवीधरा प्रत्येक; सु० ॥
 तेम मर्दनकारक वलीरे लो,
 वस्तुपाल एविवेक ॥ ब० । भा० ॥ ५ ॥
 कोरणी धोरणी तीहां करीरे लो,
 दीठे धन ते बात; सु०
 पण नवि जाए मुखे कहीरे लो,
 सुरतरु सम विख्यात ॥ ब० । भा० ॥ ६ ॥
 अणे वरसे नीपनोरेलो,
 ते प्रसाद उत्तंग ॥ सु० ॥
 बार झोडपन लक्षनेरेलो,
 खरच्याद्रव्य उछरंग ब० । भा० ॥ ७ ॥
 देराणी जेठाणीना गोखलारेलो,
 देखतां हरषते थाय, सु०

लाख अठारज खरचीयारेलो,
 घन घन एनीमाय ॥ ब० । भा० ॥ ८ ॥
 मूलनायक नेमीसरुरेलो,
 जनम थकी ब्रह्मचार; ॥ सु० ॥
 निज सत्ता रमणी थयारेलो,
 गुण अनंत आधार । ब० । भा० ॥ ९ ॥
 चारसेंने अडसठ भलारेलो,
 जिनवर बिंब विशाल ॥ सु० ॥
 आज भले अमे भेटीयारेलो,
 पाप गया पाताल । ब० । भा० ॥ १० ॥
 रिखभ धातुमय देहरेरेलो,
 एक सो पिसतालिशें बिंब ।
 चौमुख चैत्य जुहारीएरलो,
 मरुधरमां जेम अंबें । ब० । भा० ॥ ११ ॥
 बाणु काउस्सगिया तेहमारेलो,
 ओगणाशी जिराय ।
 अचलगढे बहु जिनवरारेलो,
 वंदु तेनी पाय । ब० । भा० ॥ १२ ॥
 धातु मय परमेश्वरारेलो,
 अदभूत जस खरूप । सु०
 चौमुख जिनने वंदतां रेलो,
 थाए निजगुण भूप । ब० । भा० ॥ १३ ॥

अढारसे ने अढारमां रे लो,
 बेत्र वदि श्रीज दिन । सु०
 पालनपुरना संघ शुरेलो, प्रणमी
 थयो धन धन । व० । भी० ॥१४॥
 तेम शांति जगदीशरुरेलो,
 जात्राकरी, अद्भूत ॥ सु०
 जे देखी जिन मांभरे रेलो,
 सेवा करे पुरहुत । व० । भी० ॥१५॥
 ऐम जाणी आवु तणीरे लो,
 जात्रा करशे जेह । सु० ।
 जिन उत्तम पद पामशेरे लो,
 पद्म विजय कहे तेह । व० । भ० ॥१६॥

५

(गरबाकी देशी)

हुं तो सिमरुं सदा आबूराजने जो ।
 छोडी काम अने वळी काजने जो ॥ हुं तो १॥
 आबू तीरथ अति रलियामणो जो ।
 पूरे मनना मनोरथ गाजने जो ॥ हुं तो० १ ॥
 देलवाडे देरासर चार छे जो ।
 ऋषभ देवजी सुधार काजने जो ॥ हुं तो० ३॥
 नेम नाथ स्वामीने सेविये जो ।
 जावे मदन कदन बल भाजने जो ॥ हुं तो० ४॥

देराणी जेठाणीना गोखला जो ।
 जोइ मननी टले सहु खाजने जो ॥ हुं तो० ५॥
 श्री रिषभ धातुमय देहरा जो ।
 नमु चांसुख चार जिनराजने जो ॥ हुं तो० ६॥
 गढ अचलमें देवल दीपतुं जो ।
 वांडु ऋषभ गरीब निवाजने जो ॥ हुं तो० ७॥
 शांतिनाथ प्रभू करे शांतिने जो ।
 चूर अष्ट कर्म समाजने जो ॥ हुं तो० ८॥
 प्रभु महावीर ओरिया गाममे जो ।
 नमुं शासनपति शिरताजने जो ॥ हुं तो० ९॥
 प्रभु नामथी धामने वंदना जो ।
 जग तीरथ तारण जहाजने जो ॥ हुं तो० १०॥
 भेट्यो तीर्थ आतम पावनो जो ।
 तारो वल्लभ सेवक अपाजने जो ॥ हुं तो० ११॥
 संवत ओगणीसो छासठ जेठनौ जो ।
 गुरुवार अष्टमी धन्य आजनो जो ॥ हुं तो० १२॥

 ६

(मल्ली जिनराजजी ब्रत लीजेरे एदेशी)

सेवो भवि आदिनाथ जगत्रातारे,
 आबू मंडल सुखदाता सेवो० अं० ।

प्रभुचार निक्षेपे सोहेरे,
 नाम स्थापन द्रव्य भाव मोहेरे ।
 तत्त्व सम्यक् द्राष्टि बोहे ॥ सेवो० १ ॥
 प्रभु नाम नाम जिन कहियेरे,
 स्थापना जिन पाडिमा लहियेरे ।
 द्रव्य जीव जिनेश्वर गहिये ॥ सेवो० २ ॥
 समवसरणमें भाव जिनंदारे,
 शोभे उडुगणमे जिम चंदारे
 टारे जन्म मरण भव फंदा ॥ सेवो० ॥ ३ ॥
 प्रभुमूर्ति प्रभु सम जानीरे,
 अंगीकार करे शुभ ध्यानीरे ।
 एतो मोक्ष तणी छे निशानी ॥ सेवो० ४ ॥
 नही हाथ धरे जप माळारे,
 नही नाटक मोहना चालारे ।
 प्रभु निर्मल दीन दयाला ॥ सेवो० ॥ ५ ॥
 नही शस्त्र नही संग नारीरे,
 प्रभु वीतराग अविकारीरे ।
 जग जीव तणा हितकारीरे ॥ सेवो० ॥ ६ ॥
 मुद्रा प्रभु शांत सुधारीरे,
 आत्म आनंद सुखकारीरे
 वल्लभ मन हर्ष अपारी ॥ सेवो० ॥ ७ ॥

विमलाचल करवा भणी, अरबुध अचल सुमेर,
विमल वसई जिनवंदीये, आठसैं बह्योतेर,
समकित छ हरी धारीने, किजे अरबुधजात;
विमल वसई जिनवंदीये, आदिश्वर विख्यात ॥१॥

विमलातम करवां भणी, अरबुध अचल सुमेर,
लुणग वसई जिन वंदीये, चारसे अडसठ ठेर,
समकित छ हरीने, किजे अरबुध जात;
लुणग वसई जिनवंदीये, नेमिसर विख्यात ॥२॥

विमलातम करवां भणी, अरबुध अचल सुमेर,
भेंसा मंदिर वंदीये, एक सो पिस्तालीस हेर,
समकित छहरी धारीने, किजे अरबुध जात;
भेंसा वसई नित्य वंदीये, प्रथमजिन प्रख्यात ॥३॥

विमलातम करवां भणी, अरबुध अचल सुमेर,
चउमुख चैत्ये वंदीये, एक सो इकोत्तर,
समकित छहरी धारीने, किजे अरबुध जात;
चउमुख चैत्ये वंदीये, पारस नाथ विख्यात ॥४॥

विमलातम करवां भणी, अरबुध अचल सुमेर,
अचलगढे जिन वंदीये, दोयसैं ने ववीतेर,
समकित छहरी धारीने, किजे अरबुधजात;
अचल गढे जिन वंदीये, आदिश्वर विख्यात ॥५॥

८

(देशी-जिनवर पास पियारो फलोधी बावोरे)

जिनवर ऋषभ पियारो, ऋषभ पियारो मोहन
मारो आबू वारोरे के जिनवर० अंचली ॥

चमत्कार चंद्रोदयेरे

वारी पडियो लागन सतारोरे के जि० ॥१॥
हीरा लाल मोती लडे रे

वारी छत्र करत छनकारो रे के जि० ॥२॥
मणिमंडल मंडित कार्यों रं

वारी मुगट करत झलकारा रे के जि० ॥३॥
चंद्र सूर कर्पूर कोरे

वारी रसकस मुख पर सारो रे के जि० ॥४॥
संवत् निधि शशी बावने रे

कांइ फागण शुक्ल जुहारो रे के जि० ॥५॥
कांति विजय पद दीजिये रे

कांइ नाथ न होजो न्यारे रे के जि० ॥६॥

९

(देशी पनीहारी-मारवाडी)

आबू अचल निर्मल भलो मारो वालाजीरे,
देलवाडो दिलदार स्वर्ग विसार वालाजी ।

नेमि निरंजन नाथ मु मारा०,

चैत्या अति मनोहार बोधि कार वालाजी ॥१॥

मृगपति आसन शोभ तो मारा०,
 त्रिभुवन तारण हार गिरि शृंगार वालाजी ।
 शांति समाधि रस भर्यो मारा,
 समरसनो दातार धर्माधार वालाजी ॥ २ ॥
 पूरण पुण्य पामीयो मारा०
 कर करुणा महाराज शिवपुरसाज वालाजी
 पंचम आरे प्राणीनां मारा०
 क्युं कर सरसे काज राखो लाज वालाजी ॥३॥
 राजिमती रथने मिजी मारा०
 ज्युं दीधो आधार त्युं मुझ तार वालाजी
 पशु पर तुमे करुणा करी मारी०
 मुजपर क्युं न लगार टलवलुं द्वारा वाळाजी ॥४॥
 शृगुपति नंदन वंदना मारा०
 चंदन शीत शरीर योगी वीर वालाजी
 कांतिविजय कर दीजिए मारा०
 जावे जंगम पार भांगे भीर वालाजी ॥५॥

 १०

(प्रभाति-देशी-विमलाचल नितु वदिए)
 नयने अचलगिरि निरखियो,
 मन अति हरखायो ।
 मानुं परमाणु पुण्यनो,
 ए पुंज रचायो न० ॥ १ ॥

मरु देवी नंदन मंडनो,
 जस किरसि सुहायो ।
 मेरु चतुर्दशी रूपथी,
 मानु मिलनको आयो ॥ २ ॥
 ऊर्ध्वगति ध्वज देखिये,
 जो वंदन आये ।
 मुगतिपुरि आरो हवा,
 सोपान सोहावे ॥ ३ ॥
 सिद्धि वधुवर मंडप,
 घट कंचन केरो ।
 चउ गति चूरण चौमुखो,
 टाले भवफेरो न० ॥ ४ ॥
 दूर्गति दूर्मति दुष्कृति,
 करुणा कर वारो ।
 सुरतरु आंगणमें फल्यो,
 जरा कांति निहारो न० ॥ ५ ॥



११

आबु तीर्थ स्तुति.

जय नाभी नंदन त्रिजग वंदन तीर्थ अर्चुष मंडण,
 परभाव रोधन तत्त्व शोधन कर्म अरि दल खंडन;
 कलयंती कमला कला जसघर ध्येय ध्याता वंदन
 जग जंतु तारण दुःख वारण मोह मल्ल विदंडण॥१॥

सकल संपति दान समरथ सिद्ध साधन जिववरा,
 तीर्थ सबला जेह जगमें सकल कलीमल दुखहरा,
 जसु सेव सारे प्रवर सुखर प्रेम प्रीती भवधरा,
 त्रीहुं लोक मांहे जैन तीरथ वंदो पूजो भविवरा॥२॥

आमुल्ल चुल्ला अर्थ बहुला विधि रचना लियकरी,
 विरुध रचना विचार वराजित समय सिंधुमां भारी;
 जसु मांहि प्रमणे सूरि राजैन्द्र जैन ठवणा जयकारी
 भज वरज शंका नहीय कंख्या धनसु मुनिजन
 आदरी ॥ ३ ॥



हिन्दी साहित्यके प्रेमियोंके लिये एक अमूल्य और अपूर्व लाभ ।



देशभरमें समाज सुधारके उद्देशों द्वारा हरएक वक्तिको सचेत करनेके लिये जैन समाजका जन्म हुआ है । इस मासिक पत्रमें मुख्यतः सामाजिक और शिक्षाविस्तार पर विशेष ध्यान दिया जायगा । इसके अतिरिक्त मासिक द्वारा जो आय होगी उसमेंसे स्वर्चको बाद करके शेष रकममेंसे मुकररा इनाम दिये जायेंगे । जैन समाजके प्रत्येक ग्राहकको इनामी निकट नम्बरवाला दिया जायगा जिसको ग्राहक महाशय साल भर तक सुरक्षित रखें क्योंकि साल भरके आखिरमें जिस समय इनाम बंटेगा उस समय जिनके नाम इनाम आयगा उनको अपना असली टिकट भेजना होगा । जैन समाजका वार्षिक मूल्य रु. २)

पता:—मैनेजर ' जैन समाज '
आबूरोड़—(सिरौही ।)



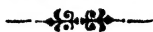
दर्शन करने योग्य प्राचीन जैन तीर्थ ।



सर्व जैन बन्धुओको निवेदन है कि बामणवाडजी जैनोंका महान प्राचीन तीर्थ स्थान है । यहांका चमत्कार इस कदर है कि जिसको अन्यधर्मी तक बड़ी जिज्ञासा एवं उत्कंठासे दर्शन करने आते हैं । मन्दिरमें बावन जिनालय है, मूल नायक श्री महावीर स्वामी हैं, मूर्ति बाद्धकी है । मंदिरके चारों ओर पक्की चर दिवारी खिची हुई है । अन्दर विशाल धर्मशाला है जिसमें हजारो जात्री आराम कर सकते हैं । सर्व प्रकारका आराम है । यहां की आब हवा इतनी तो अच्छी है कि जिसकी तारीफ करनेके बजाए दो चार दिन रहनेसे ही अनुभव होता है । जिन भाइयोंको अगर अपना स्वास्थ्य सुधारना हो इस तीर्थको जरूर भेटे एक पन्थ दो काज है । यह जगह राजपुताना-मालवा रेल्वे (R. M. R.) लाइनके पिंडवारा स्टेशनसे मात्र चार माईल दूर है । स्टेशनसे बामणवाडजी जानेके लिये बेलगाड़ी, उंट आदिकी स्वारी मिलती हैं । जो महामय तीन दिन पेशतर अगर बाणवाडजीके मैनेजरको स्वारीके वास्ते खबर दे तो वह सब इंतजाम कर देगा ।



हिन्दी साहित्य ग्रन्थावली ।



सर्व सज्जनोंको विदित हो कि हमने “हिन्दी साहित्य ग्रन्थावली” निकालना प्रारंभ कर दिया है । इसमें प्रत्येक मासके आखिरमें एक २ प्रति अति उत्तम पुस्तक हिन्दी भाषामें प्रकाशित होगी । यदि आप हिन्दी साहित्यकी सेवा करना चाहते हैं; यदि आप घर बैठे महात्मा पुरुषों तथा सती महिलाओंकी जीवनीएं पढ़ना चाहते हैं; यदि आप भिन्न २ धर्मशास्त्रोंका आशय जानना चाहते हैं, यदि आप तत्वका रहस्य लट्टना चाहते हैं; यदि आप अपने गृहस्थाश्रमको आदर्श बनाना चाहते हैं; यदि आप उद्योगी जीवन व्यतीत करना चाहते हैं; यदि आप अपना स्वास्थ्य अच्छा रखना चाहते हैं; यदि आप पश्चिमी देशोंकी अद्भुत कला व सायन्स जानना चाहते हैं और यदि आप देशका कल्याण चाहते हैं तो उपरोक्त ग्रन्थावलीसे प्रकाशित प्रत्येक पुस्तकका अवलोकन करें । एक बार अवश्य इस ग्रन्थावलीके ग्राहक बन कर अपूर्व लाभ, मात्र नामकी फीस रु. २) भेज कर उठावें । इस ग्रन्थावलीके अब तक चार ग्रन्थ प्रकट हो चुके हैं जिसका हिन्दी साहित्य प्रेमीयोंने अच्छा आदर किया है । एक बार इसके ग्राहक होकर अपूर्व लाभ उठाकर देखें ।

पता:—मैनेजर—हिन्दी साहित्य कार्यालय आबूरोड़



प्रकाशक—बी. पी. मिश्री—आबूरोड़ ।



मुद्रक—इश्वरलाल किसनदास कापीडिया “जेन विजय” प्री. प्रेस
खपाटिया चाला, लक्ष्मोनागणकी बाड़ी—मुरत ।

